न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है

न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,
बजरंग के चरणों में इक फूल चडाना है
न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,

तुम बाल समय में प्रभु,
सूरज को निगल डाले
अभिमाने सुरपति के सब दर्प मसल डाले
बजरंग हुए तब से संसार ने जाना है
न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,

सब दुर्ग ढहां कर के लंका को जलाए तुम
सीता की खबर लाये
लक्ष्मण को बचाए तुम
प्रिये भरत सरिस तुम्हे श्री राम ने माना है
न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,

जब राम नाम तुमने पाया न नगीने में,
तुम फाड़ दिए सीना सिया राम एक सीने में
विस्मित जग ने देखा कपि राम दीवाना है
न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,

हे अजर अमर स्वामी तुम हो अंतर यामी
ये दींन हीन चंचल अभिमानी अज्ञानी
तुम ने जो नजर फेरी फिर कौन ठिकाना है
न स्वर है न सरगम है न लय न तराना है,

Source:
https://www.bharattemples.com/na-swar-hai-na-sargam-hai-na-ley-na-tarana-hai/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw